Subject- Maithili (IInd semester)

Paper code- CC-6, MTL 522

Topic- Mochh-Sanhaar

Format- PDF

Name/contact- Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile- 9661819662
email- drsudhirkrsha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

मोद्ध - संहार

'मोद्ध-संहार' शीर्षक एकांकी मातृभाषा मैथिलीक प्रबल पोषक पं. श्री गोविन्द झा द्वारा लिखित अछि। प्रस्तुत एकांकी रूढ़िवादी आ नवीनताक संग्राम पर लिखल गेल अछि। एहि मे एकांकीकार अत्यन्त चतुरताक संग रूढ़िवादिता सँ ग्रसित परम्परा कैँ समाप्त करबाक चेष्टा कयलन्हि अछि। विवेच्य एकांकीक एक मात्र अहंवाद कैँ तँ दोसर मात्र ओकर ध्वंसात्मक स्वरूप कैँ व्यंग्यात्मक रूपैँ स्पष्ट कयलक अछि।

कोनो विधा चाहे ओ कथा होअए वा उपन्यास, नाटक होअए किंवा एकांकी, पढ़बा काल पाठक कैँ जे सर्वप्रथम आकर्षित करैत छैक से होइत छैक ओकर शीर्षक। शीर्षक सँ ई बुझबा जोगर भए जाइत छैक जे ओहि मे कथीक वर्णन भेल होयत। ताहि द्वारे शीर्षकक चयन सेहो लेखकक एकटा दक्षता बुझल जाइत अछि। प्रस्तुत एकांकीक नाम 'मोद्ध-संहार' बड़ सटीक भेल अछि। नामहि सँ स्पष्ट भए जाइत अछि जे एहि मे कोनो पात्रक मोदक नाश भेल हेतैक आ से ठीके। मुदा एतए मोदक संहार अप्रतिष्ठासूचक नहि अपितु प्रतिष्ठाक द्योतक अछि।

'मोद्ध-संहार' एकांकीक समस्त घटनाक्रम मुख्य पात्र जमीन्दार राय बहादुर आ हुनक नोकर रूपनाक ईर्द-गिर्द घटित होइत अछि। लेखक राय बहादुरक ओहि कालक चित्रण कयलन्हि अछि जखन हुनक आर्थिक दशा जर्जर भए गेल छलन्हि। हुनक आर्थिक स्थितिक अनुमान निम्न अंश सँ स्पष्ट भए जायत —

"सतरंजी बिछैबाकाल चरचरा उठैत छल, मुखिया कैँ एक बोरा सिमेंट दऽ कहलखिन तऽ ओ अपन ऐँठी देखब' लागल, माच मे तेल लैतधि से उपाय नहि छलनि आ चाह पिबितैथ, ताहि लेल चीनी ओ दूध उपलब्ध नहि होइत छलनि।"।

मुदा एखनो धरि हुनका जमीन्दारीक अहं नहि गेल छलन्हि। एहनो स्थिति मे ओ ककरो पर दू बित्ता फौजदारी ठोकबाक हिम्मत रखैत छलाह।

एहि एकांकीक कथावस्तुक मूल केन्द्र नन्दनमहल अछि, नन्दन-महल राय बहादुरक परम्परागत धरोहरिक रूप मे छलन्हि। ग्रामीण लोकनि ओहि मे पुस्तकालय खोलए चाहैत छलाह। एहि उद्देश्य सँ गामक मुखिया, चौधरी आ डॉक्टर गामक किछु लोकक संग मिनती करए लेल अबैत छथि। मुदा हजूर अर्थात् राय बहादुर नन्दन-महल पुस्तकालय लेल देबा हेतु तैयार नहि छथि। ओ कहैत छथि—

Scanned with CamScanner

मऽ' काल बाबूजी कहि गेल छलाह, बाउ, केवल दू वस्तु रक्षा करब, एक कुलक प्रतिष्ठा ओ दोसर ई नन्दनमहल। तखन हम कोना तोरा सभ कैं द' दियौक? बाबूजीक आत्मा कैं दुख होइन एहन काज हम कोन करब?[2]

राय बहादुर कैं एकटा बेटा छन्हि जनिक उल्लेख एहि एकांकी मे 'चौधरी' सँ कएल गेल अछि। ओ नवीन विचारधाराक एक युवक छथि। हुनक सोचबाक ढ़ंग सेहो ग्रामीणक पक्ष मे छन्हि। ओ राय बहादुर कैं कहबो करैत छथि—

नन्दनमहल मे जँ पुस्तकालय स्थापित होयतैक तँ ताहि सँ हमर बाबाक आत्मा कैं दुख किऐक होयतनि?[3]

राय बहादुर जखन सहजता सँ नन्दनमहल पुस्तकालय लेल देबा लए तैयार नहि भेलाह तँ चौधरी एकटा उपाय सोचलनि। एक राति चौधरी, राय बहादुरक बाप बनि अर्थात् अपन बाबाक रूप धारणा कए हजूर कैं उपदेश देबा लेल हुनक शयनकक्ष मे पहुँचैत छथि। हजूर सुतल छथि मुदा बापक स्वर सुनि अचकचा कए उठैत छथि। ताही काल मे चौधरी अपन बाप रूपी बेटा कैं उपदेश दैत छथि—

हमर पहिलुका सभ उपदेश आब पुरान भ' गेल। तैं हम अहाँ कैं नव उपदेश देब' स्वर्ग सँ आयल छी। सावधान भ' सुनू। बाउ, आब मोछ तनने प्रतिष्ठा नहि पायब। जतेक झुकब ततेक प्रतिष्ठा होयत। हमर नन्दनमहल जनताक चरण मे समर्पित क' दियौक। सभ मामिला-मोकदमा उठा लिय'। सभ अहाँक जय-जयकार करत।[4]

राय बहादुर अर्थात् हजूर कैं चौधरी द्वारा कहल गेल उक्ति पर विश्वास भए गेलन्हि। ओ नन्दनमहल पुस्तकालय हेतु देबा लए राजी भए गेलाह।

पं. गोविन्द झाक प्रस्तुतिक ढ़ंग बेजोड़ छन्हि। ई जाहि तथ्य कैं उजागर करए चाहैत छथि ताहि मे पूर्ण सफलीभूत भेलाह अछि। प्रस्तुत एकांकीक प्रत्येक दृश्य कथावस्तुक अनुकूल अछि। पण्डितजी, जमीन्दारक रूप देखएबा मे पूर्ण सफल भेलाह अछि। राय बहादुरक प्रत्येक वाक्य सँ हुनक जमीन्दार होएब सहजहिं बुझना योग्य भए जाइत छैक। प्रत्येक जमीन्दारक किछु ने किछु विशेष आदति रहैत छैक। लेखक, राय बहादुरक एकटा एहन लेहूकक चर्चा कएल अछि जे पाठक कैं हँसबा लेल बाध्य कए दैत अछि। हजूरक ई कहब 'तों बुड़ि छैं' आ रूपनाक ई कहब 'जी हजूर' एकटा हास्यास्पद वातावरण उत्पन्न कए दैत अछि।

वस्तुत: ई एकांकी जँ अपन दर्शक कैं हास्यक हिलकोर मे बहा कए लए चलैत अछि तँ दोसर दिश जमीन्दारक ठेसी,

Scanned with CamScanner

मृत्युक चाटुकारिता आदिक सफल चित्रण करैत अछि। प्राचीन जमीन्दारक मूल्यक चित्रणक संग नवीन विचारधारा दिस हुनका मुकएबाक प्रयोग एकांकीकार बड़ कौशलपूर्वक कएल अछि। कतहु-कतहु हिनक संवाद बड़ मार्मिक भेल अछि। संवादक सबलता निम्नस्थ उद्धरण मे द्रष्टव्य अछि—

'..... इएह इंटरा पढ़ू .....'[5]

कहबाक तात्पर्य जे एकांकीकार पात्रोचित संवाद-योजना करैत भावानुकूल भाषाक प्रयोग कए अपन एकांकी कें मार्मिक ओ सफल बनओलन्हि अछि। थोड़ परिधि मे, थोड़ कालावधि मे दर्शक कें चमत्कृते करब एकांकीकारक सफलता अछि।

सन्दर्भ-संकेत

1. एकांकी-संग्रह : मैथिली अकादमी, तृ. सं. मार्च 1986, पृ-100,101,103
2. तत्रैव, पृ- 105
3. तत्रैव, पृ- 106
4. तत्रैव, पृ-109
5. तत्रैव, पृ- 104

Scanned with CamScanner